निर्मला योग

द्विमासिक | वर्ष 1 अंक 1 | मई - जून - 1982

ॐ त्वमेव साक्षात श्री सहस्रार स्वामिनी मोक्ष प्रदायिनी,
कलकी, भगवती माता जी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः ।

सम्पादकीय

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो बताय ॥

ये शब्द गुरु स्वरूप अवतरित श्री कबीर दास जी के हैं। अर्थ बड़ा ही सरल है किन्तु इसका गूढ़ ज्ञान आज हमें सहजयोग के अन्तर्गत परमपूज्य माता जी श्री निर्मला देवी जी की अनुपम देन निर्मला विद्या द्वारा दीक्षित होने पर होता है।

आज हमारे बीच गोविन्द स्वयं गुरु रूप में समस्त संसार के त्राणार्थ उपस्थित हैं। मानव मात्र तक उनके आगमन की सूचना की शृंखला की एक कड़ी रूप निर्मला योग का यह हिन्दी का प्रथम अंक उन्हीं के पावन चरणों में समर्पित है।

निर्मला योग

43, बंगलो रोड, दिल्ली - 110007

संस्थापक : परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी

सम्पादक मण्डल : डॉ० शिव कुमार माथुर
श्री आनन्द स्वरूप मिश्र
श्री आर० डी० कुलकर्णी

प्रतिनिधि : श्री एम० वी० रत्नानवर
13, मेरबान मैन्सन
गंजवाला लेन
बोरीवली (पश्चिमी)
बम्बई - 400092

श्री प्रमोद शंकर पेटकर
469/15, सोमवार पेंठ
लालबड़ा
पुणे - 411011

इस अंक में · · · · · · · · ·

		पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	1
2.	परम पूज्य माता जी का प्रवचन	3
3.	अनुसरणीय	7
4.	परम सत्य की खोज एवं मानवीय तर्क	8
5.	त्योहार	9
6	गुरु पूजा	10

परम पूज्य माताजी का प्रवचन

(नई दिल्ली—१७ अप्रैल १९८१)

बड़ा अच्छा प्रोग्राम रहा। हम लोग जो देहली में उम्मीद कर रहे थे कि बहुत लोग आयेंगे तो बहुत लोग आ गये और पार भी हो गये। इस प्रकार पहले भी होता रहा है, बहुत से लोग आते हैं पार भी हो जाते हैं, फिर खो जाते हैं।

तो पहली बात तो यह होनी चाहिये कि उन सब लोगों का कुछ न कुछ रजिस्ट्रेशन (Registration) कीजिए। आप कुछ ग्रुप (Groups) में बाँट लीजिये और उनसे सम्पर्क, सम्बन्ध स्थापित कीजिए। नहीं तो वो फिर खो जाते हैं और सहज योग में ऐसा है कि जब तक आदमी जम नहीं जाता, तब तक वो पनपता नहीं क्योंकि यह जीवन्त क्रिया (Living process) है।

हम लोगों को जान लेना चाहिये कि जीवन्त-क्रिया में क्या-२ चीजों की जरूरत होती है। सबसे पहले तो यह है कि कोई भी डावांडोल जगह में या जहाँ हर समय (earthquake या eruptions) भूचाल होते रहते हैं; कोई भी ऐसी जगह हो तो वहाँ कोई सा पेड़ या ऐसी चीज टिक नहीं सकती। तो जिस वातावरण में हम रह रहे हैं, उस वातावरण में हमको पहले अपने आपको जमा लेना चाहिये।

और जमाने के लिये सबसे बड़ी बात यह है कि जमाने के लिये हमारे चारों ओर आस-पास का जो वातावरण है, उससे जूझने की कोई जरूरत नहीं है। आप अपने से ही अगर ठीक हो जायें, अर्थात् अन्दर से ही यदि आप स्थिर हो जायें, तो बाहर की जितनी भी चीजें हैं, धीरे २ अपने आप स्थिर हो जायेंगी। जो कुछ अन्दर है वही बाहर है अगर अन्दर से अव्यवस्थित हो तो बाहर जितना भी झंझा-वात हो, तो उसका जबरदस्त असर रहेगा। अगर आप अन्दर से बिल्कुल शान्त हैं, तो बाहर कुछ भी हो रहा हो, उसका असर नहीं होगा, उल्टा जो बाहर है, वो भी शान्त हो जायेगा। सबसे बड़ी चीज यह है कि अपने को जमा लेना चाहिए। अगर ऐसी जगह है, जहाँ बहुत उथल-पुथल है, तो ऐसी जगह से भली-भांति समझा-बुझा के किसी तरह से हट जाना चाहिए। उससे जूझना नहीं चाहिए और उससे हट जाना चाहिए और अपने दिल को वहाँ से हटा लेना चाहिए, जिससे हमारा चित्त जो है, उस उलझन में, उस उथल-पुथल में व्यस्त न हो।

सहज-योग की अपनी अनेक समस्याएं हैं। सबसे बड़ा समस्या यह है कि जो लोग पार हो गये हैं उनकी चेतना और जो लोग पार नहीं हुए हैं उनकी चेतना में बहुत बड़ा अन्तर है, बहुत महान अन्तर है। थोड़े से ही क्षण में बड़ा अन्तर आ जाता है पार होने पर। वो इस चीज को समझ नहीं पाते। इसलिए कबीर रोते थे कि, "सब जग अन्धा, सब जग अन्धा"। जितने भी बड़े लोग हुए, यह कहकर रोते रहे कि, "एक हो तो कहूँ, यहाँ तो सब जग अन्धा, सब जग अन्धा"।

जब सारे अन्धों के बीच में आप रह रहे हैं और सिर्फ एक आदमी के आँख है, तो बड़ा ही मुश्किल है दूसरों से बातचीत करना और जब आप किसी से सहजयोग की बात करेंगे तो वो लोग आप पर ऐसा असर डालेंगे कि आप ही बेवकूफ हैं। उस पर भी आप समझने लगें कि ये ही लोग अन्धे हैं तो उनको बहुत बुरा लग जायेगा अगर किसी

भी तरह आप उनसे कहें कि आप में ग़लती है और आपको संभलना है तो इन्सान को समझ लेना चाहिए कि आपकी चेतना और है। जैसे कि एक बीज है, ये बीज प्रस्फुटित हो गया जिसको कहना चाहिए, which is being manifested now, which is sprouting. इन दो बीजों में बड़ा भारी अन्तर होता है—एक बीज जो जम रहा है और दूसरे बीज का तो कोई सवाल ही नहीं उठता जमने का। वो तो बिल्कुल ही वैसा का वैसा पड़ा है और वैसे ही पड़ा रहेगा, सदियों तक। एक बीज जो जम रहा है, वो अलग चीज है और दूसरा बीज जो बिल्कुल ही वैसा पड़ा है, बिल्कुल ही दूसरी चीज है।

अब जमने के लिए भी हमें हमेशा मध्यमार्ग में रहना चाहिए। एक पेड़ की जो मध्य शाखा है, या मध्य में जो चीज चलती है, जो उसका पानी का प्रवाह है, जिसको sap कहना चाहिए वो बीचोंबीच चलता है। पेड़ भी हमेशा बीचों-बीच रहता है, एक तरफ ज्यादा झुकता नहीं, न दूसरी तरफ झुकता है। अगर उसने झुकना शुरू कर दिया तो उसकी ठीक से (growth) बढ़ोत्री नहीं होती। वो बढ़ नहीं सकता, पनप नहीं सकता। इसलिए ये ज़रूरी है कि इन्सान को जहाँ तक हो सके, मध्य में रहना चाहिए।

वो बात जो मैं आपको विशेष रूप से समझाने वाली हूँ, यह है कि आपको हमेशा मध्य में रहने की कोशिश करनी चाहिए। अगर मध्य में नहीं रहेंगे और किसी भी (Extremes) अति पर उतरना छोड़ न देंगे तो आपकी growth ही नहीं हो सकती। हो सकता है कि कोई परेशानी है, या कोई accident है, उससे आप बच जायें, या और कोई आफत से आप बच जायें। अच्छे से दिन निकल जाये, कुछ गहरी परेशानियों से निकल जाये परन्तु यह कोई महत्वपूर्ण बात नहीं। परन्तु सबसे महत्व-पूर्ण बात है कि सहजयोग में आपकी कितनी वृद्धि हुई है, प्रगति हुई है। यह खास चीज है। और इस वृद्धि के लिए आपको मध्य में रहना चाहिए, अपने चित्त पर निरोध होना चाहिए।

मतलब यह है कि अपने चित्त को देखना चाहिए कि कहाँ जाता है। आपके चित्त पर निरोध होना चाहिए। अपनी आदतों को देखिये, आपका चित्त किस चीज में बहुत ज्यादा उलझता है। जैसे किसी को ज्यादा बोलने की आदत है, माने एक तरह का बहकावा, बहलावा है। तो साहब अपना नाम लिख लीजिये और समझ लीजिये कि मिस्टर फलाना फलाना, आप बोलते ज्यादा हैं आप इसे कम करिये और आप बोलने पर अपना चित्त रखिये कि आप बोलते ही न जायें।

दूसरा है एकदम चुप रहता है, यानि ज़रूरत से ज्यादा कोई आदमी चुप रहता है तो भी गलत रास्ते पर है। इसमें रहे या उसमें, दोनों ही चीज में आदमी गलत रास्ते पर चलता है।

चित्त पर निरोध रखना चाहिए। अगर बोलते ज्यादा हों तो कम करें, अगर कम बोलते हैं तो ठीक ठीक बोलें फिर हम बोलते समय क्या बोलते हैं उस पर भी ध्यान रखना चाहिए। बेकार की बातें करने की कोई जरूरत नहीं। जहाँ तक हो सके तो सहजयोग की ही बात करें। जहाँ तक हो सके उसी परमात्मा की ही बात करनी चाहिए। लेकिन अगर कुछ बोलना भी हुआ तो थोड़ा बहुत ठीक ठीक कह दिया। बात करें और फिर उससे अपना चित्त हटा लें। इससे आदमी का चित्त बीच में रहता है। परमात्मा की ओर दृष्टि रखने से चित्त हमेशा बीच में रहता है।

और यदि हम परमात्मा के बारे में ही बोल रहे हैं या और किसी के बारे में बोल रहे हैं, और बहके जा रहे हैं, इस पर ध्यान देना चाहिए। इसमें बहुत सारी चीजें होती हैं जैसे कि किसी की (Argumentative Nature) बहस करने की आदत

होती है, यानि बहस करने की ही आदत हो गई। दूसरे जैसे किसी में कंजूसी जरूरत से ज्यादा होती है। कोई आदमी पैसे के मामले में बड़ा meticulous होता है। हर चीज़ का पैसे-पैसे का हिसाब लिखता है।

इस तरह से बहुत सी आदतें हमारे अन्दर हैं जिनको हम misidentifications कहते हैं। जैसे कि कोई आदमी जनसंघी है, वो सोचेगा हम जनसंघी हैं, कांग्रेसी अपने को कांग्रेसी कहेगा। कोई कहेगा मैं हिन्दुस्तानी हूँ, कोई कहेगा मैं ऑस्ट्रेलियन हूँ। यह सब चीजें छोड़कर पहले तो हम इन्सान हैं और हम परमात्मा के बन्दे हैं। परमात्मा ने हमें माना है, हमें Realization दिया है, जो सारे धर्मों का सार है, जिसे सबने माना है। संसार में कोई धर्म नहीं जिसने कहा कि आप पीर न हों या आप आत्मसाक्षात्कारी न हों, या द्विज न हों। ऐसा कोई धर्म नहीं। जब अब हम वो हो गए हैं, तो फिर हमारे लिए सब धर्म एक है और सब धर्म का तत्व है तो वह एक सार हममें समाया हुआ है। आप जानते हैं कि हमारे अन्दर ही सारे धर्म हैं और हमारे अन्दर ही सारे देवता (Deities) बैठे हुए हैं। तो फिर हमारे लिए सब धर्म एक हैं।

तो फिर सहजयोग में आने पर भी यह विचार हमारे अन्दर बने रहते हैं। बहुत से लोग हैं, समझ लीजिये झगड़ा है दो ग्रुप के लोगों में। एक कहेंगे कि साहब इनमें खराबी है, दूसरे कहेंगे कि उनमें खराबी है। इन्सान में तो खराबी होती ही है वो चाहे किसी भी संस्था में क्यों न हो। इन्सान में ग़लती होती है। आप देखियेगा किसी बहाने से उसमें दोष आ ही जाते हैं।

सहजयोग ऐसी प्रणाली है जिसमें आने से सारे दोष जो हैं, वो खत्म होने लग जाते हैं। और जब आपके दोष खत्म होने लग जायें तो समझ लेना चाहिए कि आपने बड़ी भारी चीज हासिल कर ली। जब तक आपके अन्दर वही दोष बने हुए हैं और आप उन्हीं चीजों में उसी प्रकार लगे हुए हैं, दूसरों से झगड़ रहे हैं, जूझ रहे हैं, तो आपको समझ लेना चाहिए कि आप मध्य में नहीं हैं। क्योंकि जब आप मध्य में आ जायेंगे तो आप किसी भी एक चीज़ में लिपट नहीं सकते, आप सबमें समाये रहते हैं। जब तक आप एक चीज में लिपटे हैं, तो समझ लेना चाहिए आप मध्य में नहीं हैं।

और मध्य में रहना ही एक कर्मेव तरीक़ा है, बुद्धि का और कोई तरीक़ा है ही नहीं।

हर चीज में आदमी चलता है। जैसे कोई बड़ा intellectual होगा। उसकी यह आदत होगी कि वह बहुत ज़्यादा हर चीज़ को सोचेगा analyse करेगा और हर चीज का मतलब निकालता रहेगा। ऐसे करते २ उसकी बाई विशुद्धि (Left Vishuddhi) बहुत जोरों से पकड़ सकती है क्योंकि वो अपने को criticise करेगा कि मैंने ये गलत काम किया वगैरह वगैरह। इस प्रकार उसके भी चक्र पकड़े जायेंगे।

अगर कोई मूर्ख होगा तो वो सामने की चीज़ को भी नहीं देखेगा। अति अक्लमन्द भी किसी काम का नहीं, मन्दबुद्धि भी किसी काम का नहीं है। बीचोंबीच रहना चाहिए। परमात्मा की जो बुद्धि है, वो बीचोंबीच है। उसी की बुद्धि में समाकर रहना चाहिए। "तेरी जो बुद्धि है उसी में मुझे चला, तेरी जो आज्ञा है उसी में मुझे रहना है और पूरी तरह से उसमें मुझे समा ले।" इसी तरह की जब बुद्धि होती जायेगी तो धीरे २ आप देखियेगा कि आपके प्रश्न हल होने शुरू हो जायेंगे और प्रश्न खड़े ही नहीं होंगे।

हम लोगों में पकड़ भी इसीलिए आती है कि हम (extremes) अति पर चले जाते हैं और अपनी आदतें नहीं बदलते। हर बार हम extreme पर

चले जाते हैं या किसी न किसी extreme पर रहते हैं। जैसे अगर किसी औरत को कपड़ों का शौक है; तो उसको देख लेना चाहिए कि उसका जरूरत से ज्यादा कपड़े पर ध्यान है, और उधर हमारा चित्त बटता है। क्या जरूरत है इतना ध्यान उधर देने को। सर्वसाधारण तरीके से रहना चाहिए। अब अगर आप दूसरी औरत हैं जो कहती है कि हमें किसी चीज की परवाह नहीं। उस औरत को ऐसा भी नहीं सोचना चाहिए क्योंकि वो भी एक दूसरा extreme हो गया। कोई सोचे जैसे कि हमें तो कुछ भी परवाह नहीं कि हम तो सन्यासी हैं--तो यह भी सहजयोग में बन्धक है।

सहजयोग में बहुत सारे बन्धक हैं। उसमें यह भी एक बन्धक है। छोटी २ चीजों के लिए सहजयोग में बताया गया है जैसे कि हर इन्सान को एक कपड़ा अन्दर जरूर पहनना चाहिए। मतलब यह है कि undershirt जरूर पहनना चाहिए। पूछते हैं कि माँ तुमने यह क्यों बन्धक डाला। वजह यह है कि अगर शर्ट के नीचे एक और कपड़ा होगा तो आपका जो चक्र जिसे अन्हद चक्र कहते हैं, उस पर protection रहेगा। यह नहीं पहनने से sense of insecurity बढ़ जायेगी। आपके दर्द होना शुरू हो जायेगा, जुकाम हो जायेगा, तरह २ की बीमारी हो सकती है। क्योंकि जब आपके अन्दर गर्मी हो जाती है, पसीना छूटता है, तब उसका कुछ (Absorber) सोखने वाला होना चाहिए। नहीं होगा तो उसमें हवा लगेगी और यह छोटी सी चीज भी चक्र को नुकसान पहुँचा सकती है। क्योंकि चक्र की भी देह होती है, अगर देह को कोई नुकसान हो जाये तो वो चक्र पर भी दिखाई देगा। इसलिए धीरे २ वो चीज बढ़ती जाती है। इसलिए सहजयोग में इसका बन्धक है कि आपको जहाँ तक हो सके अन्दर कपड़ा पहनना चाहिए।

हम लोगों में से कुछ ने अपने पिछले जीवन में भक्ति के तरीके इस्तमाल किये। भों के बीच concentrate करने का तरीका भी बहुत लोगों ने इस्तेमाल किया था। इस तरह की चीज प्रयोग में लाने का विचार पता नहीं कहाँ से उनके मन में आया था। यह बहुत गलत चीज है। जिसने ऐसा concentration का इस्तेमाल किया है, इससे आज्ञा चक्र बहुत खराब हो सकता है। ऐसे इन्सान को चाहिए कि वह अपना चित्त सहस्रार पर रखे और सहस्रार पर हमें बैठाये। हमको यहाँ सहस्रार में बैठाए या हमको हृदय में बैठाए। एक ही बात है। इसका ठीक करने का यही तरीका है। उससे आप देखियेगा कि कितना फ़र्क पड़ता है।

अभी आप कोशिश करें, हमें हृदय में बैठाएं। अभी आप हमारी तरफ देख रहे हैं। हमें हृदय में बठाएं। आँख खुली रखें। उसके बाद हमें सहस्रार पर बैठाने की कोशिश करें। आँख खुली रख कर यह प्रयत्न करें कि सहस्रार पर माँ को बैठाएं! आँख बन्द न करें जब हम यहाँ बैठे हैं तो क्यों आँख बन्द कर रहे हैं। अब हल्का हो रहा है।

अब आप जिस चोज को imagination कहते हैं वह साक्षात् हो रहा है। अब आप जिस चीज को कहेंगे हो जायेगी। जिस चीज को imagine करते हैं वो साक्षात् हो जायेगो। अब imagination साक्षात् होने लगता है। पार होने से पहले अगर आप कहते कि माँ को हम हृदय में बैठायें पर आप नहीं बैठा पाते। लेकिन अब तो चित्त अन्दर घूम रहा है, आप माँ को हृदय में बैठा सकते हैं। अब आप चित्त को हर जगह घुमा सकते हैं। चित्त को हृदय में बैठा सकते हैं। देखिये चित्त को हृदय में ले जाइये अब चित्त का movement आपको मिल गया। अब आप चित्त को अन्दर ले जा सकते हैं। अब आप चित्त का निरोध करें और भी आसानी से आप गहरे उतर सकते हैं।

अब सहस्रार पर बैठाइये हमें। आँख खुली रखें और हमें सहस्रार पर बैठाइये। हर चीज में अपनी आदतों को देखना चाहिए। जब आप देखना शुरू करेंगे, अपने को साक्षी बनायेंगे तभी आप हर चीज की ग़लती समझ पायेंगे।

कुछ लोगों की यह आदत होती है कि आगे आगे रहना। पहले आगे खड़े रहेंगे। जब हम जायेंगे तो जरूर सर उनका आगे रहेगा, कि फ़ौरन लगाये या आगे दौड़ेंगे। ऐसे आदमी को सोचना चाहिए, कि यह क्या बेवकूफ़ी है कि हम हर समय ऐसा क्यों करते हैं। ऐसे आदमी को पीछे हटना चाहिए। कोई आदमी ऐसा होगा कि पीछे ही रहेगा, सामने आयेगा ही नहीं। काम होगा, मुंह मोड़ कर चला जायेगा। कुछ बात होगी, उधर चला जायेगा। काम टालू जिसे कहते हैं, इस तरह के भी कुछ लोग होते हैं। ऐसे लोगों को समझना चाहिए कि हम काम टालू आदमी हैं, परमात्मा का काम है, उसे हमें करना चाहिए। इस तरह चित्त को बराबर बीच में रखना चाहिए। जो आपकी आदत है, उस को छुटाने का यह तरीका है कि आप दूसरी आदत डालें। जैसे आप काम टालू हैं तो काम करिये। अगर अति काम करते हैं तो थोड़ा कम करिये।

चित्त अब अन्दर घूम रहा है। आप खुद ही महसूस करेंगे कि अब चित्त अन्दर घूम रहा है। चित्त सहस्रार पर आ गया। अब चित्त से आप खोल सकते हैं सहस्रार।

इससे पहले चित्त-निरोध की बात हो ही नहीं सकती थी। क्योंकि अपनी attention को आप पकड़ नहीं पाते थे। अब attention आपके हाथ में आया है। इससे पहले कोई भी बात होती थी उसका अर्थ कोई नहीं लगता था।

अब मैं आप से कहती हूँ कि बीच में रहिये। मतलब यह कि अपना चित्त इधर उधर गिरना बिखरना नहीं चाहिए, यानि spill नहीं होना चाहिए, कहीं छिटक नहीं जाना चाहिए। चित्त को पकड़े रहना चाहिए। चित्त पर कन्ट्रोल होना चाहिए। चित्त से ही प्रगति (growth) होती है।

०००

—अनुसरणीय—

१. सदैव उदित होते सूर्य का दर्शन करना चाहिए।

२. अस्त होते सूर्य को कभी नहीं देखना चाहिए।

३. वाम अंग की बाधा वाले व्यक्ति को सदैव आंख खोल कर ध्यान करना चाहिए।

४. बन्धन कवच है। इसका प्रयोग सदैव करना चाहिए।

५. माता जी की उपस्थिति में सदैव आंख खोल कर बैठना चाहिए जब तक कि माता जी स्वयं आंख बन्द करने को न कहें।

परम सत्य की खोज एवं मानवीय तर्क

—श्री माता जी

हम अपनी खोजबीन के अन्तर्गत वास्तविक अनुभवों के सम्बन्ध में जानकारी चाहते हैं। सभी धार्मिक ग्रन्थों (शास्त्रों) में यह बात एक मत से कही गई है कि हमारा पुनर्जन्म होगा। हम अपने पुनर्जन्म की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो हमारे अन्दर ही विद्यमान है। सब धर्म इस सम्बन्ध में चर्चा करते हैं। हमें अनुभव प्राप्त करने के लिए अपने आप में स्थायित्व लाना है। यह पूर्ति अवश्य करेगी। सत्य की खोज हम बुद्धि (मस्तिष्क) द्वारा एवं तर्क द्वारा करते हैं। यह बुद्धि "सम्पूर्ण" से सम्पर्क नहीं जोड़े हुए है। वास्तव में देखा जाय तो "सम्पूर्ण" के प्रति हम भी जागरूक नहीं हैं क्योंकि हमें विपुल मात्रा में समस्याएँ घेरे हुए हैं।

चिन्तनशीलता, ज्योति-रहित अन्धकार, तर्क सम्मतता एवं जागरूकता भिन्न-भिन्न हैं। तर्क सम्मतता (Rationality) सदैव अहंकार के साथ जीवितावस्था में रहती है। हम अहंकार को तर्क सम्मतता से विलग नहीं कर सकते क्योंकि हम सिद्ध हस्त (Perfect) नहीं हैं और न ही अभी परिपक्व (Mature) हुए हैं। यदि हमारे अन्दर काफी परिपक्वता हो तो हम अणुमात्र (molecules) स्पन्दन (vibrations) होने का कारण ज्ञात कर सकते हैं। तर्क सम्मतता से इस की खोज नहीं की जा सकती न ही प्रश्नों के उत्तर दिये जा सकते हैं। उदाहरणार्थ हम मानव प्राणी क्यों हैं? हम मान्यताओं के प्रबल समर्थक हैं। यदि हम प्रत्येक वस्तु को तर्क से सिद्ध करना चाहें तो हमारा मस्तिष्क विकृत हो जायेगा और लोग हमें पागल कहेंगे। हमारी तर्क सम्मतता में अभी परिपक्वता नहीं आई है। यह प्रकाश-युक्त भी नहीं है। हमारे अन्दर का "अहं" (I) इस तर्क सम्मतता से भली भांति परिचित है। परन्तु तर्क सम्मतता इस "अहं" से परिचित नहीं है। हम एक दूसरे के उद्देश्य (Point of View) को नहीं जान सकते कि क्यों अणुमात्र से तर्क एवं न्याय (logic) द्वारा मानव जीव का प्रादुर्भाव हुआ।

यह क्रिया बिना कोई प्रयत्न किये सरलता से सम्पन्न हो गई। हम श्वास लेते हैं। हमारा हृदय स्पन्दन करता है। यह सब बिना प्रयास के सम्पन्न होता है। अतः प्रत्येक वस्तु का स्वाभाविक रूप से (Spontaneously) आविर्भाव होता है। यथा बीज से अंकुर का प्रस्फुटन स्वाभाविक रूप से होता है। केवल मनुष्य मात्र ही ईश्वर में विश्वास करते हैं, पशु पक्षी नहीं। हम अपने चिरंतर उद्देश्य में सफल नहीं हुए हैं। लोग खोज में तत्पर हैं। जागरूकता ही खोज के लिए उत्तरदायी है। हमें अपनी तर्क-शक्ति स्वच्छ रखनी चाहिए। मैं चाहती हूँ कि आप मेरे ऊपर अन्ध-विश्वास न करें किन्तु साथ ही आप अविश्वास भी न करें, क्योंकि आप इसे तर्क द्वारा सिद्ध नहीं कर सकते हैं। अब प्रफुल्लता का उपयुक्त समय आ पहुँचा है। इसमें अधिकतम परिवर्तित हो जायेंगे। अपने उद्देश्य की सफलता प्राप्त करेंगे। हमारा यंत्र जो भिन्न भिन्न धरातल पर स्थापित है ज्योतिमय होना प्रारम्भ कर दिया है। हम पृथ्वी माता के सामान्य रूप अर्थात् फलभूत से Subtle सुदृढ रूप पर पहुँचते हैं। सुदृढ (subtle) पृथ्वी माता सुरभित एवं सुगन्धित है। पृथ्वी माता का आधार कारण धुरी है। अन्त में हम उस सनातन कारण की ओर जाते हैं। वह आत्मा है अर्थात् उस सर्वशक्तिमान की प्रतिच्छाया।

सघन वनों में तपस्यारत वास्तविक गुप्तजन तथा मोजेज अब्राहीम जैसे महामनीषी जानते थे कि कुण्डलिनी का ऊपर उठाना कितना दुष्कर कार्य

है। लोग जब इसके अधिकारी बन जाते हैं तो यह दूसरों के उत्थान के लिए सरल बन जाती है। जब यह ऊपर केन्द्र में ब्रह्मरंध्र (सहस्रार) का भेदन करती है तो आत्म साक्षात्कार की उपलब्धि होती है। हमें इस बात का भी ध्यान नहीं रहता कि हमारे अन्तर्जगत में क्या अद्भुत घटना घटित हो रही है तथा हमने क्या उपलब्धि की है। यह इतना स्वाभाविक एवं सरल है परन्तु है त्वरित प्रक्रिया (Dynamic process)। यह एक (Dimensional) प्रक्रिया है जो कुण्डलिनी को ऊपर उठाती है।

मैं एक साधारण सी सद्गृहस्थ पत्नी हूँ जिसके पास यह अनुपम शिल्प (unique techique) है। मैं आपकी शिक्षक हूँ। मैं आपकी अचेतना में प्रवेश करने में सक्षम हूँ। ईसामसीह एक बढ़ई के सुपुत्र थे। उनकी माताजी बिल्कुल निरक्षर थीं। श्री कृष्ण जी ग्वाल बाल थे। जब हमें कुछ ऐसी बातों का पता लगने लगता है तो यह एक प्रारंभिक अवस्था समझिये। अपनी स्वयं की शक्ति उत्थान की योग्यता प्राप्त करके ही तर्क शक्ति को प्रकाशमय बनाती है। यह सहज प्रेम है। एक मां अपना समूचा प्रेम अपने अन्तर्जगत में नहीं समा सकती— ईसा मसीह हमारे कारण सूली पर लटका दिये गए इस को पाने के लिए और यह समझने के लिए कि हमारे पास क्या धरोहर है। इसकी यांत्रिकी (mechanism) समझने के लिऐ और पारंगत होने के लिए जिससे सहस्रों लोगों तक प्रकाश पहुँच सके। उनको मानसिक, भौतिक, दैहिक, भावनात्मक एवं धार्मिक सहायता प्रदान करनी है। इस आश्चर्य जनक महान उपहार को व्यर्थ में गवांना नहीं है। हमारी तर्कशीलता (सम्मतता) हमारे माध्यम से शान्ति स्रोत को प्रवाहित होता देखेगी। हम इस आशीष (Bliss) का आनन्द उठायेंगे तथा इस आश्चर्ययुक्त घटना के साथ प्रफुल्लता प्राप्त करेंगे।

ईश्वर आपको सदैव सुखी रक्खे।

(Seeking & Rationality का हिन्दी अनुवाद)

त्यौहार

५ मई	बुधवार	—	सहस्रार दिवस
६ मई	गुरुवार	—	नृसिंह जयन्ती
७ मई	शुक्रवार	—	बुद्ध जयन्ती
१ जुलाई	गुरुवार	—	देवशय एकादशी
६ जुलाई	मंगलवार	—	गुरु पूर्णिमा
२५ जुलाई	रविवार	—	नाग पंचमी
४ अगस्त	बुधवार	—	रक्षा बन्धन
१२ अगस्त	गुरुवार	—	श्री कृष्ण जन्माष्टमी
२२ अगस्त	रविवार	—	श्री गणेश चतुर्दशी

卐 गुरू पूजा 卐

एक मास पूर्व परम वन्दनीय माताजी ने श्री रुस्तम से कहा कि आगामी रविवार को पूर्णिमा है। अत: पूजा अर्चना का आयोजन होना चाहिए। श्री रुस्तम ने माता जी से पूछा कि आप इस अर्चना को क्या संज्ञा देंगी। क्या यह गुरु पूजा है अथवा महालक्ष्मी पूजा या श्री गणेश पूजा—परम पूज्य माताजी ने समझाया कि यह गुरु पूजा है। काफी समय व्यतीत होने के पश्चात जब वन्दनीय माताजी भारत जाने के लिए उद्यत हुई तो श्री रुस्तम जी ने पूछा कि क्रिसमस (Christmas) पूजा का आयोजन यहीं क्यों न हो ?

आज का दिन बहुत ही महत्वपूर्ण है। बहुत समय हुआ जब ईसामसीह बाल्यावस्था में ही थे तो उन्होंने धर्मशास्त्र में पढ़ा और घोषणा की कि वे अवतार हैं और उनका अवतरण संसार के कल्याण, संरक्षण एवं मंगल के लिये हुआ है। उनका विश्वास था कि संरक्षक अवश्य अवतरित होगा। बहुत दिन व्यतीत हुए, आज के ही दिन अर्थात् रविवार को "उन्होंने" घोषणा की कि वे उद्धारक के रूप में अवतरित हुए हैं। अत: इस दिन को "अवतरण रविवार" की संज्ञा प्रदान की गई। उनको इस संसार में अल्प समय ही बिताना था अत: अल्पायु में ही "उन्हें" घोषणा करनी पड़ी कि उनका अवतरण हुआ है।

यह बात अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि इससे पूर्व किसी भी अवतार ने सार्वजनिक रूप से घोषित नहीं किया था कि वे अवतार हैं। श्री रामचन्द्र जी ने तो अपने आपको भुला ही दिया था कि वे अवतारी पुरुष हैं। एक तरीके से अपनी माया के व्यामोह में आबद्ध होकर सम्पूर्ण मानव बनकर मर्यादा पुरुषोत्तम प्रख्यात हुए। श्री कृष्ण जी ने श्री अर्जुन को केवल महाभारत युद्ध के अवसर पर अपने अवतरण के सम्बन्ध में बताया। हजरत अब्राहम ने कभी भी उद्घोषित नहीं किया कि वे अवतार हैं। यद्यपि वे उस सर्व शक्तिमान के ही अवतार थे। भगवान दत्तात्रेय ने अपने अवतरण के विषय में किसी से भी नहीं कहा कि वे ईश्वर के अवतार हैं। सरलता से त्रिगुणात्मक शक्ति सम्पन्न होकर संसार के पथ प्रदर्शन हेतु मानव शरीर धारण किया। श्री मोजेज ने कभी नहीं कहा यद्यपि उनकी महत्ता का सबको भली प्रकार ज्ञान था। उन्होंने प्रकृति पर विजय प्राप्त की फिर भी उन्होंने कभी नहीं कहा कि वे अवतार हैं। ईसा के समय में घोषणा की आवश्यकता प्रतीत हुई, नहीं तो जनता अंधकार में ही रहती, किसी को भी भान नहीं होता। यदि उस समय ईसा प्रभु को पहचान लिया गया होता तो कोई समस्या ही नहीं होती परन्तु मानव प्राणी का और अधिक कल्याण एवं उत्थान आवश्यक था—किसी न किसी को तो विराट में आज्ञाचक्र को पार करना था, यही कारण था कि इस धरा पर महान ईसा का अवतरण हुआ।

यह एक विस्मयकारी बात है कि जीवन रूपी वृक्ष में जड़ें तना उभारती हैं, तना शाखाओं को जन्म देकर आगे बढ़ाता है, शाखाओं में पल्लव कुसुम प्रस्फुटित होते हैं। जिनको जड़ों का ज्ञान है उनको तना जानने की इच्छा नहीं होती। जो तना

जानते हैं उन्हें कुसुम पल्लव आदि को पहचानने की आवश्यकता नहीं होती यही विचित्र मानव स्वभाव है।

मैंने स्वयं अपने सम्बन्ध में कभी ऐसा कुछ नहीं कहा क्योंकि मानव समाज ने अपने अन्दर ईसा के समय से भी अधिक अहंकार को समेट कर भर लिया है। आप किसी पर भी दोषारोपण कर सकते हैं। आप इसे औद्योगिक क्रांति का नाम भी दे सकते है क्योंकि आप प्रकृति से बिछुड़ कर दूर हो गए हैं आप इसे कुछ भी कह सकते हैं। मानव समाज ने वास्तविकता के सारे सम्पर्क खो दिये हैं वे बनावटी रूप से परिचायित (identified) होते हैं और उन्हें वृहत वास्तविकता को मान्यता देना असम्भव प्रतीत होता है। यही कारण है कि मैंने अपने विषय में कभी एक शब्द भी नहीं कहा जब तक कि कतिपय ज्ञानी मानी सन्त जनों ने मेरे सम्बन्ध में घोषित नहीं किया। लोग कौतूहल से स्तम्भित रह गये कि कुण्डलिनी जागरण जैसे जटिल एवं दुष्कर कार्य को द्रुत गति से किस प्रकार संचालित किया गया और अपनी उपस्थिति में ही औरों से भी कराया।

भारतवर्ष में एक अति प्राचीन अनजाना मंदिर है। लोगों को विदित हुआ कि जलपोत समुद्र में एक विशिष्ट स्थान पर आते ही बरबस तट की ओर खिचे चले आते और उस आकर्षण विंदू पर रुक जाते थे। दुगनी शक्ति लगाकर खींचने से भी वे अपने उस स्थान से टस से मस न होते थे। इसका कारण नाविकों को अज्ञात ही रहा। समुद्र की गहराई सम्बंधी कुछ त्रुटि का ही अनुमान लगा कर छोड़ देते थे। परन्तु जब सब के सब पोत उस विशिष्ट बिंदू से तट की ओर आकर्षित होकर खिचे चले आने लगे तो वे सब विस्मित हुए और सोचने को बाध्य हुए कि कुछ न कुछ रहस्य अवश्य है। तब उस रहस्य का उद्घाटन करने की लालसा उनके मन में उत्पन्न हुई कि जलपोत को होता क्या है कि पोत तट की ओर आकर्षित होते हैं। इस गुत्थी को सुलझाने हेतु तटवर्ती सघन वन की खोजबीन की गई तो उन्हें एक विशाल मंदिर दृष्टि गोचर हुआ जिसके शिखर कलश पर एक चुम्बक का विशाल खण्ड रखा था जो जलयानों को अपनी आकर्षण परिधि में आने पर अपनी ओर खींच लेता था। अतः कुछ निरंतर चिंतनशील व्यक्ति अपने अनुभवी ज्ञान की कसौटी द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि पूज्य माता जी अवश्य कुछ विशिष्ट उपलब्ध शक्ति सम्पन्न हैं परंतु शास्त्रों एवं अन्य धार्मिक ग्रन्थों में तद्विषयक अवतरण के सम्बंध में कुछ भी संकेत उन्हें लिखित रूप में प्राप्त नहीं हुआ कि ऐसी प्रभूति आत्मा इस पुण्य धरा पर अवतरण कर धन्य करेंगी जो अपनी दृष्टिपात मात्र से एवं संकल्प शक्ति द्वारा ही कुण्डलिनी जागरण एवं उत्थान की प्रक्रिया सम्पन्न करेगी तथा अपने शिष्य गण से भी करायेंगी। हिमालय स्थित सघन वन वासी, निष्कलांत, निष्क्रान्त सन्त महात्मा समुदाय इस अवतरण से पूर्णरूप से अवगत हैं। वे जन साधारण से कहीं अधिक प्रज्ञावान है जिनके सम्मुख हम सब अबोध शिशु की नाईं हैं। वे वास्तव में महान हैं।

परन्तु आज का दिन महान है जब "मैं" घोषणा कर रही हूँ कि "मैं" ही वह हूँ जिसे मानवता का उद्धार करना है। उसे बचाना है। "मैं" ही आदि शक्ति हूँ। जो सब माताओं की जननी होने के नाते जगत् जननी एवं शक्ति भी हूँ। "मैं" ईश्वर की पावनतम इच्छा शक्ति हूँ, पृथ्वी पर मानव मात्र के उद्धार हेतु अवतार लिया है। "मुझे" पूर्ण विश्वास है कि "मैं" अपने प्यार, धैर्य और अद्भुत शक्ति से मानव मात्र का कल्याण करने में सक्षम होऊँगी।

"मैं" ही वह हूँ जिसने बार बार जगत के उद्धार के लिए जन्म लिया है किन्तु इस समय "मैं" अपने पूर्ण रूप में एवं सभी शक्तियों के साथ आई हूँ। अबकी मेरा अवतरण केवल मोक्ष देने के लिए ही

नहीं अपितु उद्धार के साथ ही स्वर्गादिक राज्य भी देना है जिसमें आनन्द, वात्सल्य एवं आशीष ही हैं जिसे परम पिता परमेश्वर देने के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

उपरोक्त शब्द वर्तमान में सहजयोगियों तक ही सीमित रहना चाहिए।

आज गुरु पूजा है मेरी पूजा नहीं यह गुरुओं के रूप में आपकी पूजा है। क्योंकि मैं आप सब को गुरुतत्व प्रदान कर रही हूँ। और आज ही मैं बताऊंगी कि मैंने आप पर क्या न्योछावर किया है तथा आपके आभ्यन्तर में कितनी शक्ति उडेल कर भर दी है।

आप में से कतिपय ऐसे भी महानुभाव हैं जिन्होंने अभी तक भी मुझे पूर्ण रूप से नहीं पहिचाना है—यह "मेरी" घोषणा उनके अन्दर मान्यता की जागृति उत्पन्न करने में समर्थ होगी। बिना मान्यता प्राप्त किये आप क्रीड़ा कौतुक नहीं देख सकते। बिना क्रीड़ा के आप अपने अन्दर विश्वास नहीं पैदा कर सकते। विश्वास के अभाव में आप गुरु नहीं बन सकते। गुरु पद प्राप्त किये बिना आप परोपकार नहीं कर सकते। बिना दुसरों की सहायता किये आप किसी प्रकार भी आनन्द, प्रसन्नता, प्रफुल्लता प्राप्त नहीं कर सकते। श्रृंखला तोड़ना सरल है परन्तु आपको एक के पश्चात दूसरी कड़ी जोड़कर श्रृंखला का निर्माण करना है। यही आपका इष्ट है। आप सुदृढ़ विश्वासी, प्रसन्न एवं प्रफुल्ल चित्तयुक्त और आनन्दित रहें। मेरी अपूर्व शक्ति आपकी हर अनिष्ट से रक्षा करेगी। मेरा दिव्य प्रेम आपका परिपोषण करेगा, मेरी सौजन्य प्रकृति आपके आभ्यन्तर को शान्ति और आनन्द से परिपूरित कर देगी।

ईश्वर आपको सदैव सुखी समृद्ध रखें (पूज्य माता जी के सान्निध्य में आकर) आपने क्या पाया (क्या उपलब्धि की) और आप कितने शक्ति संपन्न हैं अर्थात कितनी शक्तियां बटोर कर रख छोड़ी हैं।

पिछले दिन मैंने सम्भावोपाय और शाक्तोपाय के विषय पर चर्चा की थी—ये ही दो उपाय ऐसे हैं कि जिनके द्वारा मानव समाज का शुद्धिकरण किया जा सकता है। एक वह है जिसके द्वारा आप इने गिने ही मनुष्यों को शुद्ध कर सकते हैं आप उनमें से कुछ का चयन कीजिये और उनका शुद्धिकरण करते जाईये जब तक कि उनका चित्त पूर्ण रूप से शुद्ध न हो जाये। पंच तत्वों का शुद्धिकरण होते ही कुण्डलिनी का उत्थान होगा और लोग "पार" हो जायेंगे—यह सम्भावोपाय कहलाता है जिसमें आपका व्यक्तित्व पूर्णतया निखर जाता है।

दूसरा शाक्तोपाय जिसमें आप की कुण्डलिनी उत्थान की शक्ति विद्यमान है। चाहे परिस्थिति जैसी भी हो अपनी प्रक्रिया सम्पन्न करेगी और फिर शुद्धिकरण की प्रक्रिया की देख रेख में तत्पर होगी। सहजयोग में दूसरे उपाय को ही अपनाया गया है क्योंकि अब सम्भावोपाय की प्रक्रिया को उपयोग में लाने का समय ही नहीं रह गया है। यह असंभव सा प्रतीत होता है। शाक्तोपाय में साधारणतया शक्तिपात किया जाता है। शक्तिपात की प्रक्रिया में दूसरे के ऊपर अपनी शक्ति प्रतिबिम्ब के रूप में आरोपित की जाती है। अथवा जैसा कि हम कहते हैं कि हम पर प्रकाश निर्झर हो रहा है। अपनी कुण्डलिनी की शक्ति दूसरे की कुण्डलिनी की शक्ति पर आरोपित करते हैं और क्रमानुसार कुण्डलिनी को ऊपर की ओर अग्रसर करते हैं।

मानव प्रकृति की विचित्रता के कारण श्रम-साध्य उपाय अपना लिए गये हैं। प्रथम तो कुण्डलिनी की समस्याओं का चयन किया जायेगा अतः आपके इतिहास की जानकारी करेंगे। यथा आपके माता पिता के संस्कार कैसे हैं तथा आप किस

प्रकार के स्वप्न देखते हैं। वे आपका पूर्ण रूपेण खोजपूर्ण विश्लेषण करेंगे फिर वे आपसे यह जानकारी लेंगे कि आप किस-२ प्रकार के रोगों से आक्रान्त हुए हैं। यदि किसी की आंख में कोई रोग हो अथवा नासिका, कान, पेट में पीड़ा हो तो वे इसके निदान एवं बचाव का उपक्रम करेंगे। सो आप स्वयं कल्पना कर सकते हैं कि हम में से कितने इस श्रेणी (Category) में फिट बैठेंगे और फिर वे पूछेंगे कि आपने किस भांति का जीवन व्यतीत किया है और किस प्रकार के स्वभाव के आपके माता पिता हैं। अधिकतर ये सब बातें उन जिज्ञासुओं के लिए है जो अल्पायु में ही गुरु के सान्निध्य में जाकर शक्तिपात की प्राप्ति करना चाहते थे।

अब मेरी उपस्थिति से यह बहुत ही सरल हो गया है। यह सत्य तो आप सब को भली भांति विदित हो ही गया है। शक्तिपात में आपको शक्ति का पात करना है अर्थात आपको अपना प्रकाश दूसरों पर डालना है—शक्ति का अर्थ है बल और पात गिराना—अब आपकी शक्ति जिसके कुण्डलिनी के ऊपर गिरेगी वह उठेगी। पहिले यह एक महान कठिन कार्य था। उनकी धारणा थी कि केवल वीतरागी सन्त ही कुण्डलिनी जागृत कर सकते हैं। वीतरागी वह महात्मा है जिसने राग पर विजय प्राप्त कर ली है। जो संसार की मोह माया से परिवर्जित है अर्थात जो राग द्वेषादि दोषों से मुक्त है--वही वीतरागी है और कुण्डलिनी जागरण करा सकता है।

अतः सर्व प्रथम दीक्षा दी जानी आवश्यक है। यह आपको सब से पहिले दी जा चुकी है, जब कि आप माता जी की शरण में आये। अब आप विचार कीजिये यह सब कैसे घटित हुआ। इतनी सारी घटनाएं प्रचुर मात्रा में टेलिसकोपिकली घटित हुई जिसका कि आप को मान गुमान भी नहीं हुआ। दीक्षा प्राप्ति हेतु इच्छुक व्यक्ति को बहुत सारा कष्ट वहन करना पड़ता है। गुरु की सेवा तन, मन, धन से करनी पड़ती है उनकी प्रसन्नता के लिए पत्र, पुष्प, फल आदि से अर्चन पूजन करना आवश्यक है। गुरुजी की देख भाल (सेवा) करना शिष्य का परम कर्तव्य है। सद्गुरुओं का आपके धन दौलत आदि अन्य वस्तुओं से जिन्हें आप उन्हें अर्पण करते हैं कोई लगाव नहीं होता—निस्पृहता का भाव रहता है। इसी कारण से सामर्थ्यानुसार कुछ अन्य धन राशि गुरुजी को अर्पण करनी आवश्यक प्रतीत होती है। बहुत से पाखण्डी गुरु जन का दक्षिणा का दुरुपयोग अपवाद स्वरूप है। परन्तु यह तो सर्वमान्य सत्य है कि गुरु जन को गृहस्थ जीवन व्यतीत करना होता है अतः जीवन यापन हेतु दक्षिणा के रूप में कुछ न कुछ धन राशि वांछनीय ही नहीं श्लाघनीय है। परन्तु आज के युग में दक्षिणा एक अपवाद स्वरूप है और चरम सीमा का उल्लंघन कर गई है। लोगों ने इसे धंधा बना लिया है।

गुरु जन इस स्तर के होने चाहिए कि वह शिष्य गण की कुण्डलिनी जागृत कर सके तथा वीतरागी, विशुद्ध स्थिर चित्त अर्थात जिसका चित्त सांसारिक भोग पदार्थों से कोई लगाव नहीं रखता और लोभ मोह आदि द्वन्दों का अंशमात्र भी शेष नहीं रह जाता, जिनमें केवल क्षमा प्रदान करने के और कोई प्रलोभन नहीं रहता। ऐसे ही सन्त पुरुष को वीतरागी कहा जाता है और वही कुण्डलिनी उत्थान में समर्थ हैं। ऐसे भद्र सत्पुरुषों द्वारा ही कुण्डलिनी पर अधिकार (अधिकृत आदेश) किया जा सकता है। अन्यथा नहीं।

प्रथम तो आपने गुरुजी से बिना परिचय प्राप्त किये दीक्षा ली। तदनन्तर महा दीक्षा भी प्राप्त कर ली। प्रथम दीक्षा है, वह तो ठीक है परन्तु यह दूसरी महा दीक्षा क्या है ? महा दीक्षा वह है जिसमें आपको नाम मंत्र दिया जाता है (साधारणतया इसके अन्तर्गत एक ही "नाम" दिया जाता है)। अब यह मंत्र भी, यदि गुरुजी जानते हों तो निकाल बाहर

कर विस्मृति के गर्भ में धकेल दिया जाता है। इस का मन्तव्य है बहुत से गुरु भी नहीं जानते कि शिष्य का कौन सा चक्र बाधाग्रस्त है अथवा पकड़ में है। इसकी कल्पना कीजिए।

वे आपको जन्मपत्री का अवलोकन करेंगे और आपसे प्रश्न करेंगे कि आप उनके पास किस घड़ी में आये। आज आप गुरु के पास किस-२ समय आये। आपकी जन्मपत्री क्या है। आपकी क्या-२ कठिनाईयां होनी चाहियें। आपका जन्म किस नक्षत्र में हुआ। आपके माता पिता के नाम क्या-२ हैं। इसका भी एक प्रशस्त विज्ञान था उनकी गणना का गुणक क ख ग से प्रारम्भ होता था और एक ऐसे बिन्दु पर पहुँच जाते थे जहां पर उनको शब्द मिल जाते थे। प्रथम द्वितीय तृतीय उसी वर्ग के तदनन्तर वे मनन अध्ययन में तल्लीन हो जाते थे। यह एक महान एवं गहन शास्त्र है जिसके अध्ययन द्वारा ज्ञात करते थे कि शिष्य का कौन सा चक्र पकड़ा गया है तत्पश्चात वे आपको "नाम" देते थे उदाहरणार्थ आपको "राम" नाम प्राप्त हुआ अब आप को राम नाम का निरन्तर जप करना पड़ेगा जब तक कि आपका हृदय शुद्ध न हो जाये—परंतु यह अब उपरोक्त झंझटों में पड़ने के पश्चात ही प्राप्त होता था इसमें दो वर्ष, तीन वर्ष, दो जीवन अथवा सैकड़ों जीवन भर आप केवल राम नाम मंत्र का ही जप करते जाइये। परन्तु किया जाना चाहिए सुचारु रूप से तथा ग्रह दशा का विचार विमर्श अवश्य होता रहना चाहिए इसमें आपका घर, कुटुम्ब आदि के बारे में भी विचार विमर्श के पश्चात एक इष्ट बिंदु पर आते थे कि चक्र कहां पकड़ में है। अब आप कल्पना कीजिये कि आपके चार चक्र पकड़े गये हैं। क्योंकि आप वही देखते हैं जो आपकी जन्मपत्री में लिखा है। अर्थात आपको क्या शारीरिक कष्ट हैं तथा भविष्य में क्या-२ आपत्तिया आने वाली हैं। इन सब शारीरिक व्याधियों का पता वे जन्मपत्री अथवा जन्म कुण्डली देख भाल कर लगा लेते थे कि आपको क्या-२ व्याधियां हैं। मान लो आपके पेट में वेदना है तो वे चक्कर पर चक्कर लगाते रहेंगे और अंत में इस पेट वेदना के लिए मंत्र खोज निकालेंगे। वे वैज्ञानिकों की नांई प्रत्यक्ष रूप से तो खोज नहीं कर पाते। वैज्ञानिक किस प्रकार से अनुसंधान करते हैं इसका नमूना देखिये। कल्पना करो कि आप किसी डाक्टर के पास जाते हैं। वह आपकी आँख को निकाल कर धोयेगा और फिर वापस लगा देगा और कहेगा आपकी आंख ठीक है। आपके दांत निकालेगा, बनावटी दांत लगायेगा फिर कहेगा आपके दांत ठीक हैं फिर आपके कान की बारी हैं वह उसे निकालेगा उसमें कुछ बनावटी नया यंत्र लगायेगा और कहेगा कि यह बिल्कुल ठीक है। आपका हृदय निकाल लेगा उसका परीक्षण करेगा और दूसरा वहां लगा देगा—यह इस प्रकार से है। इसी प्रकार वे भी किया करते थे क्योंकि वे अंधकार में विचरण करते थे। जैसा कि आपको समस्त चक्रों के सम्बंध में ज्ञान है और आपको इस तथ्य की भी जानकारी है कि कौन सा चक्र पकड़ में आ गया है। अब आप कल्पना कीजिये कि आपने कितनी महा, महा, महा दीक्षा प्राप्त की है।

प्रथम दीक्षा वह है जिस दिन आपकी कुण्डलिनी जागृत होकर ऊपर अग्रसर हुई तथा आप "पार" हो गये। यह उनके वश के बाहर की बात है। वे एक श्वास से बात नहीं कर सकते। आप को सारे समय हवा में उल्टा लटका दिया जाता है जैसे रात्रि में चमगादड़ ऊपर टांग तो नीचे सिर किये रहता है। फिर वे अन्य तथ्यों का अध्ययन एवं विश्लेषण करेंगे कि आपके मित्रगण अथवा संगति कैसी है। आप किस प्रकृति के मनुष्यों की ओर आकर्षित होते हैं। आपका स्वभाव परखा जायेगा जिससे वे निर्णय लेंगे तदनन्तर आपको दूसरा मंत्र प्रदान करेंगे। आप इन मंत्रों का लगातार सामूहिक रूप से उच्चारण करते रहेंगे। आप अपनी अन्य अनिवार्य आवश्यकताओं का निराकरण कर उन मंत्रों का निरन्तर

जाप करते रहेंगे जब तक कि उनमें सफलता न प्राप्त हो जाये तब वे कहेंगे कि आपका मंत्र सिद्ध हो गया है। इसका अर्थ यह है कि इस सिद्ध मंत्र का प्रयोग आप दूसरों पर कर सकते हैं। उदाहरणार्थ आप केवल राम नाम मंत्र का ही (जो आप को दीक्षा द्वारा प्राप्त हुआ है) प्रयोग कर सकेंगे—कल्पना कीजिये।

आपकी उपलब्धियां क्या हैं। क्या आप "पार" हो गये। "पार" होने का मतलब है कि आप सब चक्रों के ज्ञाता हैं कि कौन सा मंत्र किस चक्र को ठीक करेगा। आप स्वयं भी तत्सम मंत्र रचना कर सकते हैं। आपके अन्दर इतनी शक्ति भी है कि आप समस्त चक्रों का ज्ञान प्राप्त कर लें कि उनको किस सहायता की आवश्यकता है। आप में दूसरे मनुष्यों की कुण्डलिनी जागृत करने की शक्ति विद्यमान है। यदि किसी की कुण्डलिनी सहस्रार से नीचे की ओर फिसलने लगती है तो आप में इतनी शक्ति है कि आप उसे पुनः स्थित कर दें। आप में दूसरे व्यक्तियों के चक्र ठीक करने की शक्ति भी हैं। आप बन्धन द्वारा चक्रों को स्थित (Fix) भी कर सकते हैं। आप "बंधन" द्वारा ही अपनी स्वयं की बाधाओं से त्राण (संरक्षण) भी पा सकते हैं। आप में यह भी शक्ति है कि आप अपने चित्त को किसी विशेष स्थान की ओर लगा सकते हैं जहां पर आप समझें कि किसी व्यक्ति विशेष को आपकी सहायता की आवश्यकता है। आप में सामूहिक रूप से समस्या निदान एवं निवारण करने की शक्ति भी है। यथा लंदन में क्या गड़बड़ है (आप अपने हाथ लंदन की ओर फैलाकर मालूम कर सकते हैं) हृदय का वाम भाग एवं दक्षिण भाग—दक्षिण स्वाधिष्ठान आदि। अब आप के पास भाषा है इसकी व्याख्या करने की। आपने हृदय का वाम भाग कहकर—किसी को भी हानि नहीं पहुँचाई। लंदन वासियों के वाम हृदय के पकड़ में आने का क्या मतलब है इसका अर्थ हुआ कि लंदनवासी अपनी आत्मा के विपरीत जा रहे हैं। आप का अपनी आत्मा से कोई लगाव ही नहीं है। आप भौतिक वादी हैं। अहंकार युक्त हैं। आप अपनी आत्मा के प्रति सजग नहीं हैं। आप अपनी आत्मा को हानि पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं। आप मदोन्मत्त हैं। मदिरा पान कर आप अपनी आत्मा को कलुषित कर रहे हैं यह तथ्य आप स्वीकारते भी नहीं आप यह भी नहीं कहेंगे कि इस कृत्य के लिए क्षमा याचना करनी है वरन आप अपना हाथ फैला कर लंदन वासियों के लिए हृदय वाम भाग की बाधा निवारण हेतु क्षमा याचना करेंगे—उन्हें तत्काल ही क्षमा प्राप्त हो गई। वे अधिकाधिक मदिरा का प्रयोग करेंगे और अपने हृदय का सर्वनाश कर लेंगे।

आपने सब शक्तियां एकत्र कर ली हैं कुण्डलिनी जागृत करने की तथा उसके मार्ग में आने वाली विघ्न बाधाओं पर विजय प्राप्त करने की कला जान ली है। यदि किसी व्यक्ति का आज्ञा चक्र बाधायुक्त है तो गुरु महाराज उसे ठीक करने में हिचकिचायेंगे क्योंकि उनको भय है कि कहीं उनका आज्ञा चक्र भी पकड़ में न आ जाये। अतः उन्हें मंत्र सिद्धि की आवश्यकता पड़ती है। सिद्ध होने का अर्थ है फलित यानी प्रभावशाली है। आपका प्रत्येक मंत्र तात्कालिक प्रभाव रखता है। आप अमुक देवता का स्मरण कीजिये आपका मंत्र तत्काल फल देगा। क्योंकि वह स्वयं सिद्ध मंत्र है। एक बन्डल की भांति इसके अन्दर सभी कुछ तो भरा है। इसे अनावृत कर प्राप्त कीजिये। यदि किसी का कोई चक्र पकड़ में आ गया है आप मंत्रोच्चार कीजिये—सब कुछ ठीक हो जायेगा क्योंकि आपको सब मंत्रों का ज्ञान है। आप यह भी जानते हैं कि यह क्या है? और उस विषय का आपको पूर्ण ज्ञान है। यह गुप्त ज्ञान भी है क्योंकि इसे दूसरे नहीं जान सकते। यदि आप नामोच्चार भी नहीं करते तो भी संकेत मात्र से काम चल सकता है। इस तथ्य की सब को जानकारी है कि मामला क्या है, कहां जाना है और क्या करना है। यह इतना गोपनीय होने पर भी परस्पर ज्ञान सुलभ है। हमारी विचार साम्य की एकरूपकता

का अवलोकन कीजिये जो हम सब के मध्य वर्तमान है। हम जानते हैं कि क्या, क्या है परन्तु हम अपने आप को बुरा महसूस नहीं करते ना ही दूसरों को बुरा कहते हैं। यदि कहा जाये कि आप में बड़ा भारी अहंकार है तो कोई बुरा नहीं करेगा। क्राइस्ट के समय में अहंकार का नाम लेना भी असम्भव था। अब आप कह सकते हैं और आप अपनी इगो एवं सुपर इगो को देख भी सकते हैं। ये ही नहीं वरन बहुत सी व्यर्थ अनर्गल प्रत्येक वस्तु दिखाई देती है।

आप यह भी देख सकते हैं कि अमुक व्यक्ति सम्पन्न है। यथा जन्म जात पार व्यक्ति। परन्तु वह शक्ति सम्पन्न होते हुए भी कुण्डलिनी उत्थान के सम्बंध में एक शब्द भी नहीं जानता अस्तु कुण्डलिनी जागृत नहीं कर सकता। वह सहजयोग का आश्रय लिए बिना कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया सम्पन्न नहीं कर सकता। ये जन्म जात पार व्यक्ति को जो अपने आप को सनातन समझते हैं, इस तथ्य से अवगत होना चाहिए कि उन्हें सहजयोगी बनना है। अन्यथा वे क्रियावादी नहीं हो सकते क्रियाशील हो रहेंगे।

यह सब वस्तुएँ (तथ्य) आपके पास आभ्यन्तर में विद्धमान हैं। सब देवताओं का आपको पूर्ण ज्ञान है। आप यह भी जानते हैं कि वे कब रुष्ट हो जाते हैं। यदि कहा जाये कि पाप मत करो तो आप पूछेंगे कि पाप क्या है तब आप कहेंगे यह मत करो। आप कोई प्रपंच रचने का प्रयत्न कीजिये आप सफल होंगे। क्योंकि आप की "मां" का आप पर अनिवार्य "बंधन" है। यदि आप मदिरा पान करेंगे तो आप को वमन होगा। यदि आप अकरणीय कार्य करेंगे तो आपका आमाशय खराब हो जायेगा। यदि आप सहजयोग से अपने आपको वंचित करना चाहेंगे ता आप ऐसा नहीं कर सकते। हालांकि आप को इसका आभास मात्र भी नहीं है, फिर भी आप के आभ्यन्तर में सहजयोग का आकर्षण (लत्तक) विद्यमान है।

ऐसे लोगों का समूह अभी भी विद्यमान है कि जो पार तो हो गये हैं परन्तु वहां हैं नहीं। इन दोनों में क्या अन्तर है। अत्यन्त साधारण सा अन्तर है। मान्यता एवं श्रद्धा का अभाव। जिन्होंने मुझे नहीं पहिचाना है अथवा मान्यता नहीं प्रदान की वे मुक्ति प्राप्त न कर सकेंगे (वे चक्कर ही काटते रहेंगे) सो मान्यता देनी आवश्यक है। एक बड़ा सुन्दर उदाहरण शिरडी के सांई नाथ के शिष्यों का है यद्यपि वे विद्यमान (सशरीर) नहीं परन्तु वे उनमें अटूट श्रद्धा एवं विश्वास रखते हैं। अब वह कहां हैं। वे वर्तमान के अवतार में श्रद्धा विश्वास नहीं रखते। वे मेरे में ही निष्ठा रखते हैं। वे राम के प्रति निष्ठा रखते हैं। उनकी श्रद्धा क्राइस्ट में है। बहुत से ईसाई बन्धुओं की समस्या यही है कि वे मेरा तुलनात्मक सम्बंध ईसा से जोड़ते हैं। यदि वे मेरा सम्बंध ईसा अथवा मोजेज से नहीं जोड़ते हैं तो वे सहजयोग में नहीं आते।

आपको वर्तमान में रहना है। आप मेरे सम्बंध में अपने मानसिक उद्वेग के अनुरूप धारणा नहीं बना सकते। क्योंकि आपकी धारणा सीमाबद्ध है। कल्पना करो कि आपका जन्म यहां हुआ तो आप ईसाई होंगे। यदि आप भारत में जन्मे हैं तो आप हिन्दु होंगे। यदि आपका जन्म चीन में हुआ है तो आप चीनी होंगे। आप कुछ भी हो सकते हैं। अतः आपकी त्रुटिपूर्ण परिचय प्रणाली क्रियाशील हो जाती है और आप इस त्रुटि का तत्काल ही आभास पा लेंगे कि आपकी चैतन्य लहरियां (Vibrations) स्वतः बन्द हो जायेगी। मानव समुदाय का वह वर्ग जो मध्य वर्ती है तथा जिन्होंने सहजयोग में पूर्ण स्थायित्व एवं स्थिरता प्राप्त नहीं की है और उनके पास पूर्ण शक्ति का भी अभाव है ऐसे पुरुष मान्यता, श्रद्धा एवं निष्ठा प्राप्त नहीं कर सकते। वे इस निष्ठा को प्राप्त न करने में अपना दम्भ प्रकट करते हैं। यह महान मूर्खता है। जैसे ही आप श्रद्धा युक्त मान्यता देंगे आपकी चैतन्य लहरियां स्वतः बहने

लगेंगी—ऐसे मनुष्यों का वर्ग दूसरे गुरुओं के पास से भटक कर आता है। जब ऐसे पुरुष सहजयोग में पदार्पण करते हैं तो एक समस्या उत्पन्न हो जाती है। वे मेरी अहेतुकि कृपा से पार तो हो जाते हैं (चाहे केस कैसा भी हो सब पार हो जाते हैं) अभी पिछले दिनों यहां एक वेश्या आई और "पार" हो गई। सहजयोग अपनी रस्सी ढीली छोड़ देता है। आप अपनी आनन्द लहरियों को सहजता से विनष्ट नहीं कर सकते यदि आपने सुचारु रूप से नियमानुसार प्राप्त किया हो तो—सहजयोग में, प्रकाश में प्रवेश के पश्चात आप अपने अवगुण एवं त्रुटियों का स्वतः अवलोकन करने लगते हैं। यदि आप सहजयोग को नकारना चाहते हैं तो ऐसी दशा में कुछ व्यक्तियों को तो चुभन, जलन महसूस होने लगती है साधारणतया कुछ ही ऐसे होते है जो प्रकृतिस्थ रहते हैं। कुछ में मेरे सम्मुख आते ही कम्पन आरम्भ हो जाती है। कुछ में विशेष प्रकार की टेढ़ी मेढ़ी ऐंठन (Contortions) प्रारम्भ हो जाती है। आप में से बहुतों ने देखा होगा कि कुछ मेरे दर्शन करते ही महती उष्णता का अनुभव करने लगते हैं। अथवा उनके आमाशय में भयंकर पीड़ा उठती है। जब आप प्रकाश के सम्मुख उपस्थित होते हैं तो आप अपने स्वयं के सम्मुख प्रस्तुत हो जाते हैं। परन्तु आप अपने स्वयं का सामना करना पसन्द नहीं करते। तत्व की बात यह है कि जिन्होंने सहजयोग में स्थायित्व प्राप्त नहीं किया है वे अपने स्वयं के सामने आने से ही कतराते हैं। यदि वे स्वयं का स्वयं ही सामना करें तो वे शीघ्र ही अपने अन्दर सुधार ला सकेंगे क्योंकि प्रकाश वहां विद्यमान है। आप अपने अवगुण एवं त्रुटियों के साथ परिचय (Identify) मत कीजिये। आप डाक्टर हैं—आप में प्रकाश है—आप शल्य क्रिया (Operation) जानते हैं शल्य क्रिया कीजिये क्योंकि आप इस शल्य प्रक्रिया में सिद्धहस्त हो गए हैं।

यदि आप यह दृढ़ निश्चय कर लें कि हमें अपने स्वयं का सामना करना ही है कि हम देखें कि हम कौन हैं (मैं कौन हूँ क्या हूँ) तो तत्काल ही ये सब दुर्गुण एवं त्रुटियां दूर भाग जायेंगी परन्तु आप तो सामना करना ही नहीं चाहते। यही कारण है कि पार हुए व्यक्ति भी सहजयोग में आना पसन्द नहीं करते। जिनको शीतल मन्द सुगन्धित बयार का अनुभव रहता है वे इस सम्बन्ध में अधिक सोच विचार नहीं करते। यदि वे अधिक सोच विचार करें तो उन्हें अपने अहंकार (Ego) को त्यागना पड़ता है जिसे उन्होंने विगत कई वर्षों से संजोया हुआ है। उन्हें आत्म निरीक्षण करना ही पड़ेगा अर्थात उन्हें अपने स्वयं को स्वयं ही देखना पड़ेगा। वे कहते सुने जाते हैं कि मेरे अन्दर कुछ भी सुधार नहीं हुआ है। चुभन सी हो रही है। सारे शरीर में सुइयों की सी चुभन का अनुभव हो रहा है। यह कैसे हो सकता है। यह मुझे सहायता नहीं कर रहा है। सहजयोग मुझे पीछे की ओर धकेल रहा है। इन सब बाधाओं के लिए वे सहजयोग पर दोषारोपण करेंगे उन लोगों को नहीं देखेंगे जिन्होंने उन्नत अवस्था प्राप्त कर ली है। आप किस पर दोषारोपण कर रहे हैं। आप उसी पर दोष मंढ रहे हैं जो आपकी रक्षा करेगा—आप अपने रक्षक को ही दोषी ठहरा रहे हैं। यह बेहतर है कि आप अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं खोज लें और अपनी कमजोरियों का निराकरण करें। आप अपने स्वयं पर कृपा करें जिससे आप इन भयानक सांप बिच्छू (डंक मारने वाले जन्तुओं से) जो आपके इर्द गिर्द मंडरा रहे हैं छुटकारा पा सकें। अपने को विशुद्ध कर लें। प्रकाश का शुभागमन हो गया है। इस प्रकाश द्वारा आप सत्यान्वेषण का प्रयास करें। तब आपकी अपरिचितता (Misidentification) का निवारण होगा और वास्तविक परिचय (Identification) प्राप्त होगा और स्थापित होगा। किसी अन्य प्रकार से नहीं होगा। अतः आप को अपने स्वयं का सामना करने की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। कभी भी औचित्य सिद्ध न करें।

कुछ व्यक्तियों की अपने पुत्र, भ्राता, स्त्री अथवा पति की अनर्गल सराहना करने की आदत होती है और उसका औचित्य (Justification) भी सिद्ध करते हैं। इस भांति आप उनकी कोई सहायता नहीं कर रहे हैं। बाधा युक्त व्यक्तियों की एक जुट होकर (मिल जुलकर) कार्य करने की प्रकृति भी होती है। सदैव दो बाधा युक्त पुरुष, दिखावे के लिए, एकजुट होकर कार्य प्रवृत हो जायेंगे। महान आश्चर्य तो इस बात का है कि इन लोगों ने अपना संघ यहां संगठित नहीं किया है नहीं तो मेरे विरोध में इन बाधा युक्त पुरुषों का एक अलग से संघ बन जाता। भविष्य में ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। क्योंकि इनमें संयुक्त भाई चारे की प्रणाली विद्यमान होती है। जैसा कि आपने देखा होगा कि डाकू सदैव संयुक्त रूप से रहते हैं उनमें परस्पर मैत्री भाव अधिक मात्रा में पाया जाता है। वे सब एक दूसरे की गुप्त बातें जानते हैं परन्तु दो सम्भ्रान्त व्यक्ति यदि संयुक्त हो जायें तो सारा विश्व ही परिवर्तित हो जाये। आपको यह बात हृदयंगम करनी चाहिए। आपको भद्र पुरुषों (Positive) से ही सम्पर्क करना चाहिए नहीं तो आप सहजयोग का विकास न कर पा सकेंगे। जो कोई भी नकारात्मक बातें करें उसके सम्पर्क में नहीं आना चाहिए।

परन्तु इस देश में दूसरे ही ग्रुप के आदमी वर्तमान हैं। आप कल के आधुनिक गुरु बनने वाले हैं अतः आपको भिन्न भिन्न टाइप (प्रकृति) के पुरुषों का ब्योरा दे रही हूँ अर्थात हर प्रकार के व्यक्तियों के बारे जतला रही हूँ। वे स्वयं का सामना करना नहीं चाहते परन्तु इससे बच निकलने के कितने ही मार्ग उन्हें मालूम हैं। उनमें से कुछ ऐसे हैं कि ज्यों ही वे पार हुए उसका विश्लेषण प्रारम्भ कर देते हैं। आप उन्हें कुछ भी दीजिये वे विश्लेषण आरम्भ कर देंगे। इस देश में वे प्रत्येक वस्तु का विश्लेषण कर सकते हैं। भगवान ही जानता है कि उन्होंने यह विचार (Idea) कहां से पाया—कदाचित तथाकथित वैज्ञानिकों, मनोवैज्ञानिकों अथवा प्रभृति विद्वानों ने उन्हें यह विचार प्रदान किया है। वे सोचते हैं कि हम कह देंगे कि अमुक बात तर्क सम्मत है। परन्तु अपने चक्षुओं का उन्मूलन नहीं किया है। आप अभी केवल अबोध शिशु मात्र हैं। आप पूर्ण ज्ञान बिना इन सबका विश्लेषण कैसे कर सकते हैं। परन्तु आप प्रत्येक वस्तु का विश्लेषण प्रारम्भ कर देते हैं कि यह वस्तु ऐसे क्यों हुई। वह वस्तु वैसे क्यों हुई आदि-२ एक बार आपने विश्लेषण प्रारम्भ किया तत्सम्बंधी वार्तालाप किया उसका भी विश्लेषण किया—आपने इस प्रकार सब कुछ गंवा दिया।

आपको जो कुछ भी करना है वह यह कि आप "इसे" ग्रहण कीजिये तदनुरूप अपने को ढालने की चेष्ठा कीजिये। अधिकाधिक इसे पाने की चेष्टा कीजिये और औरों के लिए ग्राह्य बनाइये। इसके सामने अपने स्वयं को नग्नावस्था में लाइये—सहज योग में त्रुटियां न खोजिये क्योंकि जो कुछ भी त्रुटियां हैं वे आप में हैं। ये सब दोष सहज प्रेम द्वारा ही ठीक दशा में परिवर्तित हो सकते हैं।

ऐसे भी पुरुष हैं जो मुझसे कहते हैं कि माताजी आप इस प्रकार क्यों नहीं करतीं—आप उस प्रकार से क्यों नहीं करती हैं आदि-२। मैं अपने कार्य कलाप में सिद्ध हस्त हूँ फिर भी वे मुझे शिक्षा देने की चेष्टा करते हैं कि माता जी ने ऐसा किया—उनको ऐसा करना था आदि आदि आप चाहे जिस प्रणाली से कार्य करें मानव प्रकृति नीचे से ऊपर (Jack in the box की तरह) जाने की होती है। सो आपको अपनी प्रकृति में मूल परिवर्तन लाना है। इस उहा पोह उछल कूद वाले स्प्रिंग्स को जरा सा सरकाइये आपकी स्थिति दृढ़ होगी। ये स्प्रिंग्स कुछ भी नहीं बल्कि बारीक विश्लेषण व्यापार है। आपका ऐसे बहुत से (विपुल मात्रा में) मनुष्यों के साथ सम्पर्क होगा—अब प्रश्न यह है कि उनसे

किस प्रकार से संपर्क एवं व्यवहार स्थापित किया जाये।

निर्विचारिता को वे एक निम्न कोटि की वस्तु मानते हैं और जो व्यक्ति इस बारे में वार्तालाप करें वह उन्मादी हैं। देखिये जब आप निर्विचारिता से जागरुकता के संबंध में वार्तालाप करेंगे तो वे आप को पुरातनपंथी कहेंगे, क्योंकि आप सोच विचार नहीं करते। यह वास्तव में घटित हुआ है ऐसी शक्ति द्वारा जो सोच विचार से परे, बहुत उच्च श्रेणी की है। सोच विचार करने से आपको क्या उपलब्धि हुई अर्थात क्या कर लिया। सोच विचार से आपने अपने नाक, कान, हाथ यहां तक कि प्रत्येक वस्तु काट ली—अब आप एक महायुद्ध छेड़ने को उद्यत हैं। क्या आश्चर्यजनक विचार हैं। सो आप उन्हें जतला दें कि सोच विचार से कुछ भी बनने वाला नहीं है अर्थात आप उसे नहीं पा सकते—वह एक ऊच्चतर श्रेणी की शक्ति है। उच्चतर वस्तु की बातचीत ने आपको यह प्रदान किया है। यदि आप उस निम्नतम सोच विचारने की शक्ति से उच्चतर शक्ति में आना चाहते हैं तो आपको केवल सोच विचार को निम्नस्तर पर रखना पड़ेगा। वे इस तरीके से ही परिधि में आयेंगे। यदि आप यह कहने की कोशिश करें कि कृपया सोचिये मत। क्या नहीं सोचें विचारें। यह तो विचारणीय ही नहीं है। यह तो व्यर्थ है। ऐसे अहंवादी व्यक्तियों से इसी प्रकार व्यवहार करना चाहिए। जो सोच विचार करते हैं पर मान्यता नहीं देते यद्यपि उन्हें शीतल समीर का अनुभव प्राप्त है। तो आप ऐसे पुरुषों की क्रमशः सहायता करें।

अब गुरुजनों के लिए जैसे कि आप हैं। आप सर्वगुण सम्पन्न ज्ञानवान हैं सब शक्तियां यहां तक कि प्रत्येक वस्तु आपके अधिकार में है। आप में केवल आत्म विश्वास की न्यूनता है। आप में निष्क्रियता (inertia) है। मालूम नहीं यह निष्क्रियता किस प्रकार से पलायन करेगी। कभी कभी ऐसे निष्क्रिय लोग भी उपयोग में आ सकते हैं। सरकस में उन्हें तोप के मुंह में पलीते के साथ रखकर उड़ा (Blast) दिया जाता है। इस प्रकार वे अपने करतबों का प्रदर्शन करते हैं। वे इतने आलस ग्रस्त हैं कि उनको कोई भी विघ्न बाधा विचलित नहीं कर सकती।

आप मेरे सुपुत्र हैं। आपको श्री गणेश जी व ईसामसीह की छवि के पश्चात बनाया है। उनकी सब शक्तियां आप में विद्यमान है। एक प्वाइन्ट है, जहां मैं स्तब्ध रह जाती हूं कि किस प्रकार आपकी निष्क्रियता (inertia) दूर भगायें। आपने सहज योग का अभ्यास (Practice) नहीं किया है। आप कोई भी अभ्यास नहीं कर पाये हैं। आप ने (इन विभूतियों को) सहज में आसानी से सस्ते में पा लिया है। आप को इसका मूल्य ज्ञात नहीं—अतः आप इसे गौण (Sidetrack) रखना चाहते हैं। आपको स्वयं अनुशासन में अनुशासित होना है। जब तक आप अपने आपको अनुशासन बद्ध नहीं करेंगे, मैं इसको, आपकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर छोड़ती हूं। क्योंकि मैं आपकी स्वतंत्रता में विश्वास रखती हूं। मेरे विचार से आप इतनी निम्न कोटि के नहीं हैं कि मैं आपकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर पाबन्दी लगाऊं। अर्थात आप अपनी स्वतंत्रता को व्यवहार में लायें।

आप पूर्ण रूप से स्वतंत्र हैं यदि आप नरक में जाना पसंद करते हैं तो "मैं" आप को रथ में बैठा कर सीधे गन्तव्य स्थान पर भेज दूंगी यदि आप स्वर्ग में जाना चाहते हैं तो "मैं" आपके लिए विमान का प्रबंध कर दूंगी—यह आप पर निर्भर करता है कि आप त्वरित (Dynamic) बन जायें और अपने अन्दर आत्म विश्वास लायें। आपको प्रत्येक चक्र का ज्ञान है। आप कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया भी जानते हैं। आप प्रत्येक प्रक्रिया जानते हैं। अस्तु प्रत्येक कार्य अपने ऊपर लेकर स्वयं कीजिये।

मैं यदाकदा आप सब लोगों से रुष्ट भी हो सकती हूँ, अत्यंत साधारण बात है। परन्तु नहीं, मुझे अपना कार्य सिद्ध करना है। आप से मृदुल संभाषण करना है। कभी कभी भला बुरा कहकर अथवा डांट डपट कर काम चलाना पड़ता है। भिन्न भिन्न प्रकार से कुछ न कुछ पूछना पड़ता है। कभी स्निग्धता का प्रयोग तो कभी उष्णता का प्रकोप तो कभी शीतलता को काम में लाना पड़ता है। कभी इस तरह से तो कभी उस प्रकार से उन्हें सहजयोग में स्थिरता प्राप्त करने का प्रबन्ध करना पड़ता है। कभी-२ प्रलोभन आदि से भी उन्हें घेर घार कर रखना पड़ता है कि वे यहां जमे रहें।

इसी भांति आपको भी उनसे व्यवहार करना है। उनसे रुष्ट नहीं होना है। आपके लिए रुष्ट होना सबसे आसान है तब तो फिर कोई समस्या ही नहीं रहेगी। यदि मैं आप सबसे एक बार भी रुष्ट हो जाती हूँ तो मुझे अपनी शान्ति प्राप्त होती, और समस्याएँ भी नहीं रह जाती हैं। परन्तु आपसब को उन सबके साथ वास्तव में बहुत धीरज के साथ व्यवहार करना है। अत्यधिक धैर्य रक्खें। आप की भाषा भी सुसंस्कृत होनी चाहिये। "कृपया" "मुझे खेद है" आदि बहुत से ऐसे शब्द हैं। परन्तु मैं सोचती हूँ ये सब अपना मूल्य खो चुके हैं।

अतः हम एक प्वाइन्ट पर आते हैं कि हमें हृदय से पढ़ना चाहिये, हमें अपने हृदय से संवेदना प्रकट करनी चाहिए। हमें उसे हृदय से बचाना चाहिए। हमें उसकी सहायता करनी है। परन्तु कभी कभी उन्हें डांट डपट कर भी रखना पड़ सकता है क्योंकि जैसा कि आपको विदित ही होगा कि बहुत से बाधा युक्त जन जन्म जात कौतुकी, कौतुहल पूर्ण प्रकृति के होते हैं। वे कौतुक एवं कोलाहल पूर्ण दृश्य उपस्थित करने में पारंगत होते हैं। वे अधिकतम प्रदर्शन के धनी हैं।

इस कोटि के मनुष्यों की रक्षा करनी है। तथा अत्यंत धैर्य के साथ व्यवहार करना है।

ईश्वर आपको सदा सुखी रखें!

लंदन में

2 दिसम्बर 1979, को अवतरण रविवार के शुभावसर पर आयोजित गुरु पूजा पर परम वंदनीय माता जी का सार-गर्भित भाषण का हिन्दी रूपान्तर।

"परमात्मा को बेचा नहीं जा सकता, न ही खरीदा जा सकता है। जो लोग परमात्मा के नाम पर अपना उदर निर्वाह करते हैं वे कनिष्टतम हैं।"

—श्री माता जी

Registered with the Registrar of Newspapers under Regn. No. 36999/81

WARNING

THE THIRD WORLD WAR, SAID SHRI MATAJI, IS NOT AN ELEMENT IN THE PLAN OF GOD TO BRING ABOUT SATTYA YUGA. IT WOULD ONLY CREATE MEANINGLESS DESTRUCTION AND SUFFERINGS. YET MEN'S MADNESS IS PRESENTLY CREATING THE CONDITIONS WHICH MAKE THIS DREADFUL CALAMITY VERY LIKELY. IN ANY CASES THE SAHAJA YOGIS WILL BE PROTECTED BUT THEY SHOULD CLEARLY UNDERSTAND THEIR RESPONSIBILITY. IF ALL THE SAHAJA YOGIS DO NOT PUT ALL THEIR ENERGY AND AVOID THIS BY ACTIVELY SPREADING SAHAJA YOGA IT MAY WELL HAPPEN. AND SOON.

Edited & Published by Sh. S. C. Rai, 43, Bunglow Road, Delhi-110007 and
Printed at Ratnadeep Press, Darya Ganj, New Delhi-110002.
One Issue Rs. 5.00 Annual Subscription Rs. 20.00 Foreign [By Airmail £ 4 $ 8]